INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 12 | ISSUE - 11 | DECEMBER - 2022

वाल्मीकीय रामायण में वर्णित गंगा नदी का पर्यावरणीय योगदान

डॉ. रेनू शुक्ला[1] & सायंती चौधुरी[2]
[1]असिस्टेण्ट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग,
डॉ. सी. व्ही. रामन् विश्वविद्यालय कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)
[2]शोधार्थी, संस्कृत विभाग, डॉ. सी. वी. रामन् विश्वविद्यालय करगीरोड,
कोटा, बिलासपुर (छ.ग)

सारांश

वाल्मीकि रामायण के गहन अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि आदिकवि सम्पूर्ण वि"व के भौगोलिक स्थितियों के बारे में स्पष्ट ज्ञान था, महर्षि वाल्मीकि अपने रामायण में गंगा, तमसा, यमुना, नर्मदा, सरयू, गोदावरी, कावेरी, मंदाकिनी आदि प्रमुख नदियों के बारे में वर्णन किया है। भारतवर्ष में गंगा को मुख्य नदी माना जाता है, इसलिए महर्षि वाल्मीकि अपने महाकाव्य रामायण में गंगा नदी की विस्तार से चर्चा की गई है।

प्रस्तावना :–

सम्पूर्ण मानवजाती के कल्याण हेतु आदिकवि महर्षि वाल्मीकि स्वकृत संहिता में विशुद्ध पानी से भरी विभिन्न रमणीय नदियों का वर्णन किया हैं। रामायण काल में नदियाँ थी बहुदका अर्थात् पानी से भरा हुआ इसी बारे में रामायण के अरण्यकाण्ड में कहा गया हैं–

नदीः बहूदकाः।। (अरण्यकाण्ड 07/02)

रामायण काल समय में नदियों का पानी था अप्रदुषित, स्वच्छ एवं वि"ाुद्ध। हमें इस महाकाव्य में स्वच्छ और वि"ाुद्ध पानी से भरा समुद्रगामिनी बहुत सारे नदियों का वर्णन मिलता है–

प्रसन्नाम्बुवहाश्चैव सरितः सागरंगमाः।। (किष्किन्धाकाण्ड/13/05)

भारतवर्ष की चार सबसे दीर्घ/लम्बी नदियों में से एक है गंगा, इन 4 नदियां हैं– सिंधु, ब्रह्मपुत्र, गंगा और गोदावरी। पानी निर्वाहन के आधार पर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी नदी है– गंगा, गंगा को सबसे पवित्र माना जाता हैं।

गंगा भारतवर्ष की परम पवित्र और सबसे महत्वपूर्ण श्रेष्ठ नदी। श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण के वालकाण्ड में गंगा नदी को सर्वश्रेष्ठ नदी का दर्जा दिया गया है–

तिश्ठन्तु सर्वदाशाश्च गंगामन्वाश्रिता नदीम्।
बलयुक्ता नदीरक्षा मांसमूलफलाशनाः।। (अयोध्याकाण्ड/84/07)

विशयवस्तु –

भारतवर्ष की चार सबसे लंबी नदियों में से एक है गंगा नदी । यह चार नदिया सिंधु, ब्रह्मपुत्र गंगा और गोदावरी। जल निर्वाहन के आधार पर वि"व की तीसरी सबसे बड़ी नदी है गंगा नदी। गंगा को सबसे पवित्र

माना जाता है। यह नदी भारतवर्ष की परमपवित्र और सबसे महत्वपूर्ण माना गया है। श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण के अयोध्याकाण्ड में गंगा नदी को सर्वश्रेष्ठ नदी माना गया है।

गंगा च सरितां श्रेश्ठा।। (बालकाण्ड/35/22)

यह नदी भारतीय संस्कृति की प्राणतत्व–स्वरूप हैं। इस नदी का उद्गमस्थल है पश्चिमी हिमालय पर्वत। भारतवर्ष के उत्तराखंड राज्य में देवप्रयाग नामक एक स्थान हैं। गंगा नदी का सृष्टि इस देवप्रयाग में दो नदी– अलकनंदा एवं भागीरथी के संगम के बाद संयुक्त धारा गंगा नदी के नाम से जानी जाती हैं। लेकिन भारतीय सनातन हिंदु संस्कृति ने भागीरथी को ही गंगा मूल स्त्रोत मानते है। भागीरथी नदी का उद्गम स्थल है– गढ़वाल हिमालय के गोमुख नामक स्थान पर गंगोत्री हिमनंद। गंगा के इस उद्गम स्थल की ऊँचाई है 3140 मीटर अलकानन्दा नदी लंबी हैं। अलकानंदा नदी का उद्गम स्थल सतोपंथ हिमानद और भागीरथी खारक हिमनद के संगम पर 3880 मीटर की ऊँचाई पर हैं। अलकानंदा नदी को उत्तरीभारत की प्रमुख नदियों में से एक माना जाता है लेकिन देवप्रयाग–यहाँ अलकानंदा और भागीरथी का संगम स्थल है– उस जगह से यह दो नदी के रूप में जाना जाता है। उत्तरभारत और पूर्वभारत में बहकर पश्चिम बंगाल की खाड़ी (बंगोपसागर) में मिल जाती हैं।

ऐसे में गंगा की दो धाराएं पाए जाते है– एक धारा भागीरथी आर हगली नदी के से दक्षिण दिशा में प्रवाहित होकर बंगोपसागर में संयुक्त हुआ है। और दुसरी धारा बांग्लादेश की सीमा में प्रवेश करके महानन्दा के साथ मिलित होकर यह पद्मा नदी में प्रवाहित हुई है। पद्मा नदी को मुख्यतः गंगा नदी की प्रमुख शाखा नदी/सहायक नदी क रूप में मानी जाती है। गंगा नदी की लंबाई करीब 2041 किलोमीटर है। यह एक अंतर्राष्ट्रीय नदी है। यह दुनिया की सबसे अधिक आबादी वाला नदी बेसिन हैं। गंगा बेसिन की जनसंख्या लगभग 400 करोड़ हैं।

गंगा नदी के तट पर बसे प्रमुखशहरों में से उत्तराखंड के ऋषिकेश और हरिद्वार, उत्तरप्रदेश के कानपुर, इलाहाबाद और वाराणसी, बिहार के भागलपुर, पटना, गाजीपुर, कटिहार और मुंगेर, पश्चिम बंगाल के मुर्शिदाबाद, नवदीप, शातिपुर, कोलकाता, वरानगर, डायमंड हार्बर, उलुवेड़िया, बैरकपुर, आदि विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं।

हिंदु पुराण के अनुसार गंगा नदी और उसका जल परम पवित्र माना जाता हैं। कई जगहों पर स्थानीय नदियों को गंगा तुल्य माना जाता हैं। उदाहरण के लिए, कावेरी नदी को वर्तमान में दक्षिणी गंगा माना जाता है। गोदावरी नदी को ऋषि गौतम द्वारा दक्षिण भारत में लाई गई गंगा माना जाता है। यह माना जाता है। यह माना जाता है के सभी पवित्र जल में ही गंगा अधिष्ठित हैं।

गंगासलिलमुत्तमम्।। (बालकाण्ड/43/41)

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण में बालकाण्ड के 35 सर्ग से 44 सर्ग तक हमें गंगा नदी का वर्णन मिलता है। इसके अलावा रामायण के लगभग हर एक काण्ड में परम पवित्र गंगा का वर्णन मिलता है। यह माना जाता है कि आर्य सभ्यता गंगा बेसिन की समृद्धि से मोहित होकर ही पश्चिम भारत से पूर्वी भारत में स्थानांतरित हुआ था। रामायण महाकाव्य ही गंगा की कहानी को हिंदु धर्मग्रंथों में स्थायीरूप प्रदान किया है। महर्षि वाल्मीकि ने गंगा का उद्गमस्थल में ही सप्तधारा के नाम से अभिहित किया है–

सप्त स्रोतांसि जज्ञिरे।। (बालकाण्ड/43/11)

मानवजीवन में गंगा नदी के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। अधिकांश कृषि क्षेत्र गंगा नदी बेसिन में विकसित हुई हैं। समग्र भारतवर्ष में जहाँ–जहाँ भारतीय सभ्यता का विकास हुआ गंगा नदी उन सभी स्थानों में एक जाना–पहचाना नाम है। इस गंगा क्षेत्र में कई वर्षों से इन्दों आर्य सभ्यता विकसित हुई हैं। अनादि काल से हमारी जीवन दात्री, हमारे सुख–दुख के यह नदी साथी है। यह गंगा नदी हमारे लिए देवी स्वरूपा हैं। हमारी आर्थिक स्थिति का सुधार और बिगड़ना इसी नदी पर निर्भरशील हैं। सभ्यता–संस्कृति का केंद्रभूमि यह गंगा नदी बेसिन ही हैं।

वाल्मीकि रामायण की 'रामायणमाहात्यम्' में हम जान पाए के भगवान् विष्णु के चरणों से परम पुण्यमयी गंगा नदी प्रकट हुई–

तत्र गंगा महापुण्यां विश्णुपादोद्भवां नदीम्।। (श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणमाहात्म्यम्/02/07)

वाल्मीकीय रामायण के बालकाण्ड के 35 तम सर्ग में महर्षि वि"वामित्र श्रीराम एवं लक्ष्मण के साथ गंगातट पर पहुंचकर वहाँ रात्रिवास किया एवं श्रीराम के पूछने पर महर्षि वि"वामित्रजी ने गंगाजी की उत्पत्ति के बारे में बताया–

गंगां त्रिपथगां नदीम्।। (बालकाण्ड/35/12)

त्रिपथगां नदीम्।। (बालकाण्ड/35/17)

अर्थात महर्षि वि"वामित्र गंगा देवी के वर्णन में पवित्र गंगा को 'त्रिपथग' नाम से अभिहित किया।

श्रीरामचंद्र के प्र"न से प्रेरित होकर महर्षि वि"वामित्र ने गंगा की उत्पत्ति और विकास के बारे में बात करना शुरू किया–

तस्यां गंगेयमभवज्ज्येश्ठाहिमवतः सुता।
उमा नाम द्वितीयाभूत् कन्या तस्यैव राघव।। (बालकाण्ड/35/16)

ऋषियों ने देवताओं की सभी कार्य सिद्धियों के लिए हिमालय के पास जाकर उनकी जेष्ठाकन्या स्वर्ग, मर्त्य, पाताल गामिनी गंगा नदी के लिए प्रार्थना की। उस समय हिमालय धर्म के अनुसार त्रिभुवन के मंगल के लिए त्रिलोक के पवित्रकारीणी एवं स्वच्छंद गामिनी गंगा को देवताओं को दान किया देवताओं ने त्रिभुवन की रक्षा के लिए गंगादेवी को लेकर मन ही मन कृतार्थ हुए–

प्रतिगृह्य त्रिलोकार्थं त्रिलोकहितकांक्षिणः।
गंगामादाय तेऽगच्छन् कृतार्थेनान्तरात्मना।।(बालकाण्ड/35/19)

श्रीरामचंद्र महर्षि वि"वामित्र से गंगा के बारे में सबकुछ जानना चहा– "त्रिलोककी पवित्र करने वाली गंगा किस कारण से तीन मांगों में प्रवाहित होती हैं? सरिताओं में श्रेष्ठ गंगा की 'त्रिपथगा' नाम से प्रसिद्धि क्यों हुई?"

त्रीन् पथो हेतुना केन प्लावयेल्लोकपावनी।
कथं गंगा त्रिपथगा विश्रुता सरिदुत्तमा।। (बालकाण्ड/36/03)

श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण में वर्णित सगर राजा के पुत्रों का महर्षि कपिल के रोष से जलकर भस्म हुआ और गंगाजल में भींग कर स्वर्गलोक में गमन किया। बाद में अं"ुमान और भगीरथ ने गंगाजी को स्वग से पृथ्वी पर लाने के लिए तपस्या की थी ब्रह्माजी ने भगीरथ को वरदान दिया था गंगाजी को पृथ्वीलोक में लाने का और इस बारे में उन्होंने महादेवजी का वचन लेने की सलाह दी थी। भगीरथ की तपस्या में संतुष्ट होकर महादेव जी ने गंगा को अपने सिर/मतस्क में धारण कर लिया।

प्रीतस्तेऽहं नरश्रेश्ठ करिश्यामि तव प्रियम्।
शिरसा धारयिश्यामि भौलराजसुतामहम्।। (बालकाण्ड/43/03)

भगीरथ द्वारा पृथ्वीलोक में आने के समय गंगा नदी अधिक पराक्रमी होने के कारण यज्ञ करने वाला जह्नु राजा के यज्ञ मंडप को बहा ले गई थी। राजा जह्नु इसे गंगाजी का अहंकार समझकर कुपित होकर उन्होंने गंगा नदी के समस्त जल को पी लिया। तब देवता गंधर्व तथा ऋषियों ने विस्मित होकर पुरूष प्रवर महात्मा जह्नु की स्तुति करने लगे। इससे महातेजस्वी जह्नु बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने अपने कानों के छिद्रों द्वारा गंगाजी को प्रकट कर दिया इसलिए गंगाजी को जह्नु की पुत्री जाह्नवी कहते हैं।

तस्माज्जह्नुसुता गंगा प्रोच्यते जाह्नवीति च।। (बालकाण्ड/43/38)

ब्रह्माजी ने भगीरथ की प्र"ंसा करते हुए उन्हे गंगा जल से पितरों के तर्पण की आज्ञा दिया था–

पितामहानां सर्वेशां कुरूश्व सलिलक्रियाम्।। (बालकाण्ड/44/15)

महर्षि ब्रह्माजी ने भगीरथ को कहा था कि यह गंगा नदी उनकी भी ज्येष्ठ पुत्री बनकर रहेंगी और उनके नाम पर रखे हुए भागीरथी के नाम से इस जगत में विख्यात होंग–

इयं च दुहिता ज्येश्ठा तव गंगा भविश्यति।
त्वत्कृतेन च नाम्नाथ लोके स्थास्यन्ति देववत्।।(बालकाण्ड/44/05)

गंगा जी को त्रिपथगा, दिव्या और भागीरथी इन तीनों नाम से प्रसिद्धी है। आका"ा, पृथ्वी और पाताल इन तीनों पथों का पवित्र करते हुए गमन करती त्रिपथगामिनी–

गंगा त्रिपथगा नाम दिव्या भागीरथीति च।
त्रीन् पथो भावयन्तीति तस्मान् त्रिपथगा स्मृता।।(बालकाण्ड/44/06)

वाल्मीकीय रामायण के अयोध्या काण्ड में वर्णित श्रीरामचंद्र जी के राज्याभिषेक के लिए लाये गये सामानों का वर्णन करने के समय गंगा और यमुना के पवित्र संगम स्थल से पवित्र जल के संग्रह को संदर्भित करती–

गंगायमुनयोः पुण्यात् संगमादाहृतं जलम्।।(अयोध्याकाण्ड/15/05)

वाल्मीकि रामायण के अयोध्याकाण्ड में श्रीरामचंद्र वनवास की आज्ञा मांग कर अयोध्या नगरी को छोड़कर को"ाल दे"ा को पार करके श्रृंगवेरपुर में गंगा नदी के तट पर पहुँचकर उन्होंने गंगा की मनोरम शोभा को प्रत्यक्ष द"र्ान किया। उन्होंने कहा था कि गंगा का जल देवताओं, गंधर्वों, मनुष्यों, सर्पों, पशुओं तथा पक्षियों के लिए समादरणीय हैं। यह गंगा नदी सभी के लिए कल्याण स्वरूपा हैं। सरिताआ में भी गंगाजी श्रेष्ठ मानी जाती हैं।

प्रेक्षामि सरितां श्रेश्ठां सम्मान्यसलिलां शिवाम्।
देवमानवगन्धर्वमृगपन्नगपक्षिणाम्।। (अयोध्याकाण्ड/50/29)

श्रीरामचंद्र जी ने गंगा महादेवी के जटाजूट से सृष्ट और समुद्र की रानी भी कहकर अभिहित किया है–

भांकरस्य जटाजूटाद् भ्रश्टां।।(अयोध्याकाण्ड/50/25)
समुद्रमहिशीं गंगां।। (अयोध्याकाण्ड/50/26)

श्रीमद्वालमीकीयरामायण के अयोध्याकाण्ड में वर्णित है– श्रीरामचंद्र जी ने अपने भ्राता लक्ष्मण और पत्नी सीतादेवी को लेकर कोसल दे"ा को अतिक्रम करके वत्सदे"ा में प्रवे"ा करने के लिए सीतादेवी ने गंगा मा से प्रार्थना की थी–

पुत्रो दशरथस्यायं महाराजस्य धीमतः।
निदेशं पालयत्वेनं गंगे त्वदभिरक्षितः।।(अयोध्याकाण्ड/52/83)
चतुर्दश हि वर्शाणि समग्राण्युण्य कानने।
भ्रात्रा सह मया चैव पुनः प्रत्यागमिश्यति।।(अयोध्याकाण्ड/52/84)

ऐसी प्रार्थना करने के प"चात् श्रीरमचंद्र, सीतादेवी और लक्ष्मण तीनो मिलकर एक नाव पर सवार हुए और गंगा–जमुना के संगम स्थल पर जा पहुँचे, जो वर्तमान में उत्तरप्रदे"ा राज्य के इलाहाबाद नामक स्थान में हैं। इस जगह को 'प्रयाग' नाम से भी अभिहित किया जाता है–

यत्र भागीरथों गंगां यमुनाभिप्रवर्तते।।(अयोध्याकाण्ड/54/02)
प्रयागमभितः पश्य।। (अयोध्याकाण्ड/54/05)
नुनं प्राप्ताः स्म सम्भेदं गंगायमुनयोर्वयम्।
तथाहि श्रूयते भाब्दो बारिणोर्वारिघर्शजः।।(अयोध्याकाण्ड/54/06)

वाल्मीकि रामायण के अयोध्याकाण्ड में वर्णित है– रघुनंदन भरत ने श्रीरामचंद्र को वनवास से वापस लाने के लिए अयोध्या नगर से गंगा नदी के तट तक वि"ोष कलाकारों द्वारा सुरम्य वासस्थान निर्माण एवं कूपादियुक्त राजपथ निर्माण का आदे"ा दिया था। अतः दक्ष कारिगरों ने उसका निर्माण किया। विविध प्रकार के वृक्षों और वनों से सु"ोभित, शीतल, निर्मल जल से पूर्ण और बड़ी–बड़ी मछलियों से व्याप्त गंगा नदी के किनारे बड़ी अनुपम शोभा पा रहे थे। रात्रि में वह राजपथ चन्द्रमा और ताराओं से मण्डित निर्मल आका"ा के तरह सु"ोभित होता था–

जाह्नवीं तु समासाद्य विविधद्रुमकाननाम्।
भीतलामलपानीयां महामीनसमाकुलाम्।।(अयोध्याकाण्ड/80/21)
सचन्द्रतारागणमण्डितं यथा
नभः क्षपायाममलं विराजते।
नरेन्द्रमार्गः स तदा व्यारजत
क्रमेण रम्यः भुभशिल्पिनिर्मितः।।(अयोध्याकाण्ड/80/22)

सेना के साथ रघुनंदन भरत चक्रवाकों से सु"ाोभित गंगातट पर पहुँचकर पुण्यसलिला गंगा नदी में स्वर्गीय महाराज द"ारथ के पारलौकिक कल्याण के लिए तर्पण का निर्णय लिया।

दातुं च तावदिच्छामि स्वर्गतस्य महीपते।
और्ध्वदेहनिमित्तार्थमवतीर्योदकं नदीम्।।(अयोध्याकाण्ड/83/24)

यह पितृतर्पण आज भी हिन्दु समाज में विद्यमान है।

उपसंहार –

हमारा भारतवर्ष एक नदी मात्रिक दे"ा है। इसलिए नदी के साथ मानव का एक गहरा सम्बंध विद्यमान है। नदी को केंद्र बनाकर मानव अपने वासस्थान का निर्माण किए तथा अपने जीवनयापन करने का रस्ता भी खोज लिए। आदिकाल से ही नदियों ने व्यापार, वणिज्य, जनवसति, कृषिकार्य, ि"ाल्प आदि के साथ संचार के साधन के रूप में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गंगा इन्ही नदियों में से एक है। रामायण कालीन गंगा नदी वि"ाुद्ध, सुपेय एवं प्रदुषण से मुक्त था। लेकिन आज गंगा नदी का पानी प्रदुषित हो गया। गंगा नदी की पवित्रता और परि"ाोधन के लिए जन–जागरूकता सबसे पहले आव"यक है। आन वाले पीढियों को स्वस्थ वातावरण देने के लिए गंगा नदी की रक्षा करना हम सभी का दायित्व और कर्तव्य है।

संदर्भ सूची :–

- महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण, संवत् 2073,गीताप्रेस गोरखपुर, (उत्तर प्रदे"ा) अयोध्याकाण्ड/54/28
- अरण्यकाण्ड 07/02
- किष्किन्धाकाण्ड/13/05
- अयोध्याकाण्ड/84/07
- बालकाण्ड/35/22
- बालकाण्ड/43/41
- बालकाण्ड/43/11
- श्रीमद्वाल्मीकीयरामायणमाहात्म्यम्/02/07
- बालकाण्ड/35/12
- बालकाण्ड/35/17
- बालकाण्ड/35/16
- बालकाण्ड/35/19
- बालकाण्ड/36/03
- बालकाण्ड/43/03
- बालकाण्ड/43/38
- बालकाण्ड/44/15
- बालकाण्ड/44/05
- बालकाण्ड/44/06
- अयोध्याकाण्ड/15/05
- अयोध्याकाण्ड/50/29
- अयोध्याकाण्ड/50/25
- अयोध्याकाण्ड/50/26
- अयोध्याकाण्ड/52/83
- अयोध्याकाण्ड/52/84

- अयोध्याकाण्ड / 54 / 02
- अयोध्याकाण्ड / 54 / 05
- अयोध्याकाण्ड / 54 / 06
- अयोध्याकाण्ड / 80 / 21
- अयोध्याकाण्ड / 80 / 22
- अयोध्याकाण्ड / 83 / 24